National School of Drama
Repertory Company
presents

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF CULTURE
Government of India
सत्यमेव जयते

Azadi Ka Amrit Mahotsav

धर्मवीर भारती कृत

बन्द गली का आख़िरी मकान

(एक आलेख – दो भिन्न प्रस्तुतियाँ)
एक अनूठा नाट्य प्रयोग

निर्देशन
देवेन्द्र राज अंकुर

प्रथम प्रयोग

अभिमंच सभागार

बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड
मंडी हाउस, नई दिल्ली - 110001

26, 27, 28 अप्रैल 2024 सायं 6.30 बजे

टिकट : ₹ 300/- 200/- 100/-

8 वर्ष से छोटे बच्चों का प्रवेश एवं कैमरा और मोबाइल फोन वर्जित है | कृपया कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन करें।

पूछताछ 23031105, 23031106. : Web:www.nsd.gov.in

द्वितीय प्रयोग

सम्मुख सभागार

बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड
मंडी हाउस, नई दिल्ली - 110001

26, 27, 28 अप्रैल 2024 दोपहर 3.30 बजे

अतिरिक्त प्रदर्शन

27–28 अप्रैल 2024 सायं 7.15 बजे

टिकट : ₹ 200/-

ऑनलाइन टिकट www.bookmyshow.com

टिकट उपलब्ध होने पर, प्रदर्शन से एक घंटे पूर्व राष्ट्रीय नाटय विद्यालय के काउंटर से प्राप्त कर सकते है |

धर्मवीर भारती
नाटककार

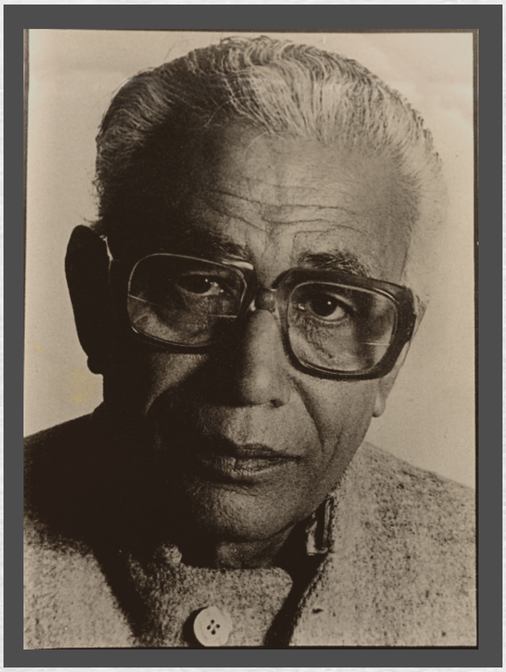

सन 1926 में इलाहाबाद में जन्मे धर्मवीर भारती एक प्रसिद्ध कवि, लेखक, नाटककार और प्रतिष्ठित सम्पादक थे। आपने 1946 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया और हिन्दी में सर्वोच्च अंक हासिल करने के लिए 'चिन्तामणि घोष पुरस्कार' जीता। इस अवधि के दौरान आप 'अभ्युदय' और 'संगम' पत्रिकाओं के उप–सम्पादक भी बने। बाद में, 1954 में आपने पीएच.डी. पूरी की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी के व्याख्याता के रूप में नियुक्त हुए।

1950 का दशक भारती के जीवन का सबसे रचनात्मक काल रहा जब आपने कई उपन्यास, नाटक, कविताएँ, निबन्ध और आलोचनात्मक रचनाएँ लिखीं। आपकी उल्लेखनीय उपन्यासों में –'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'ग्यारह सपनों का देश' और 'प्रारम्भ से समापन' और कविताओं में–'कनुप्रिया', 'ठण्डा लोहा', 'सात गीत वर्ष', 'सपना अभी भी' और 'टूटा पहिया' ' शामिल हैं। आपका नाटक–'अन्धा युग' बहुत प्रसिद्ध हुआ जिसे अब तक देश भर में कई बार प्रदर्शित किया गया है। भारती जी 1960 से 1987 तक हिन्दी की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'धर्मयुग' के मुख्य सम्पादक रहे।

धर्मवीर भारती जी को 1972 में साहित्य के लिए पद्मश्री, 1988 में नाटक लेखन के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार और भारत भारती सम्मान, व्यास सम्मान सहित कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1997 में भारती जी का निधन हो गया।

Dharamvir Bharati
Playwright

Born in 1926 in Allahabad, Dharamvir Bharati was a renowned poet, author, playwright and an Editor of repute. He did his MA in Hindi from Allahabad University in 1946 and won the "Chintamani Ghosh Award" for securing highest marks in Hindi. He became the sub-editor for magazines 'Abhyudaya' and 'Sangam' during this period. Later, he completed his Ph.D. in 1954 and was appointed as a lecturer in Hindi at Allahabad University.

The 1950s decade was the most creative period in Bharati's life when he wrote many novels, dramas, poems, essays, and a number of critical works. His notable works include, novels—'Gunahon ka Devta', ' Suraj Ka Satwan Ghoda', 'Giyara sapno ka desh' and 'Prarambh se Samapan and poems—'Kanupriya', 'Thanda Loha', 'Saat Geet Varsh', 'Sapana Abhi Bhi' and 'Toota Pahiya' and the most famous drama—'Andha Yug' that has been performed frequently till now. Bharati became the Chief Editor of the famous Hindi literary magazine 'Dharamayug' from 1960 to 1987.

Bharati was awarded the Padmashree for literature in 1972, the Sangeet Natak Akademi Award for Play writing in 1988 and many others including Bharat Bharati Samman, Vyasa Samman etc. He died in 1997.

कथा–मंचन का अद्भुत अनुभव – 1996

धर्मवीर भारती

साल में कभी एक–दो बार दिल्ली जाता हूँ तो अपने बहनोई–बहन सुरिंदर सिंह और पद्मा के ही पास ठहरता हूँ–टोडरमल रोड, बंगाली मार्केट। एक तो वह घर से बढ़कर घर है, पता ही नहीं चलता कि कहीं बाहर हूँ। मुंबई में घर से निकला, दो घंटे की उड़ान के बाद फिर दिल्ली में घर में पहुँच गया। इसके अलावा एक और सुविधा है। मैं मुंबई में रहता होऊँ, किसी भी स्थिति पर पहुँच गया होऊँ, पर बुनियादी तौर पर आज भी वही हूँ–अतरसुइया, इलाहाबाद का संघर्षरत, लेकिन शौकीन–मिजाज़, किशोर। वह कैशोर्य आज तक ज्यों–का–त्यों मन में बचा हुआ है। और इलाहाबाद का यह जो हिस्सा है न, अतरसुइया, यहियापुर, लोकनाथ, चौक–यह बाकी इलाहाबाद से, सिविल लाइन या कैंटूनमेंट वाले इलाहाबाद से बिल्कुल अलग है। अमीरों की बस्तियाँ नहीं हैं ये, पर रहन–सहन, तौर–तरीका, सारा अमीराना ठाट का हैं। अच्छे कलफदार कपड़े, खालिस कनौजिया गुलाब का इत्र, ठेठ देसी ठाट की मिठाइयाँ, इमरती, बालूसाही, कलाकंद, गुलाब जामुन और उसके ऊपर गुलाबजल में भिगोई सुपारीवाला असली मघई पान का बीड़ा। यह सब मुंबई में कहाँ नसीब, मगर बंगाली मार्केट में पहुँचकर अपने कैशोर्य के इलाहाबाद का यह अंश तो मिल ही जाता है। ताज़े फलों का रस, बढ़िया लस्सी, सोंठ की चटनी और दहीवाली उम्दा चाट और ठेठ देसी ठाट की मिठाइयाँ और सबसे बढ़कर बढ़िया मघई पान का मनमाफिक बीड़ा। दिल्ली में दिन चाहे जैसा बौद्धिक नीरसता या छद्म साहित्यिकता का बीते, पर शाम पुराने इलाहाबादी रस में डूबी हुई मिल जाती है।

लेकिन उस दिन वह शाम कुछ अजीब थी। न चाट रुची, न. मिठाई जमी और पान की तरफ तो रुख ही नहीं किया। बस घर आया और धप्प–से सोफे पर गुमसुम बैठ गया। कुछ अजीब–सा मन था। कहीं बेहद भरा–भरा खुश, बेहद खुश और कहीं उतना ही उदास, खोया–खोया–सा, कुछ पुराने ज़ख्म कहीं अंदर टीसने लगे हों, वैसा। बड़ी व्याकुलता महसूस कर रहा था। हुआ यह था कि उस दिन अपराह में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा मंचित, अंकुर जी द्वारा निर्देशित 'बंद गली का आखिरी मकान' की प्रस्तुति देखकर लौटा था। क्या चमत्कार किया था अंकुर जी ने, या यह कहूँ कि जुल्म किया था मुझ गरीब पर। मानो गले में भारी पत्थर बाँधकर काल–प्रवाह की नदी में ऐसा ढकेल दिया था कि बेबस मैं छटपटाता हुआ, उल्टी दिशा में बहता रहा था, गहरे और गहरे, अपने धुर बचपन की ओर, जब मैं छह–सात बरस का रहा होऊँगा। वह उम्र, वह परिवेश, वे , वे लोग–मुंशी जी, बिरजा, हरिया। उन्हीं के बीच भटक रहे हैं छह–सात बरस के बच्चन बाबू (बचपन में यही नाम था मेरा), और दिल जैसे, आँसू–भरी यादों के समंदर में डूबता चला जा रहा हो, सब कुछ खारा लग रहा है और साँस घुट रही है। मन बहुत कुछ बोलना चाह रहा है, पर कोई उसकी सुने तो? मेरे दुमंज़िले पक्के मकान के सामने कच्चा, इकमंज़िला खपरैलोंवाला घर था, जिसमें रहते थे मुंशी जी और बिरजा। उनके असली नाम... नहीं, जाने दीजिए, असली नाम जानकर क्या करेंगे, कहानीवाले नामों से ही काम चला लें। ये बता दूँ कि मुंशी जी को मैं मुंशी जी नहीं कहता था। में उनको कहता था 'हप्पू चाचा'। क्योंकि उस समय लाड़ में खाने को 'हप्पा' कहता था और अपने घर का खाना छोड़कर मुझे उनके घर का 'हप्पा' अच्छा लगा था।

मेरी माँ बहुत अच्छा खाना बनाती थीं, उड़द की खिली–खिली दाल घी में सराबोर, बेसन की ऐसी तरकारी कि मछली खानेवाले को लगे कि मछली खा रहे हैं, बथुए की, पालक की, मेथी की रोटियाँ... बाबू के सारे दोस्त अम्मा के हाथ का खाना खाने के मुंतजिर रहते थे मगर यह सब तो पच्छिमी उत्तरप्रदेश का खाना था। उनका बेटा बच्चन इलाहाबाद में पैदा हुआ, पक्का इलाहाबादी था। उसको चाहिए था मुंशी जी के घर का 'हप्पा'। मिर्च का तड़का देकर छौंकी हुई अरहर की गरम–गरम दानेदार दाल में शुद्ध कच्चा घी, और खिला–खिला, महकदार चावल, कभी अरवा चावल, कभी बासमती। मुंशी जी हुक्का एक ओर रखकर आवाज देते थे– ''बच्चन बाबू हो, तुम्हरी चाची थाली लिये बैठी हैं, बेटा!'' और बच्चन बाबू घर के जाने किस दरवाजे से निकलकर मुंशी जी के खपरैलवाले बरामदे में पहुँच जाते। बिरजा पीढ़ा बिछातीं, थाली लगातीं, भात पसाकर चमचे से परोसतीं, दाल डालतीं, दाल पर कच्चे घी का लोंदा, और हाथ में बॉस की बुनी हथबेनिया (पंखा) लेकर बैठ जातीं। पहले पंखा झलकर दाल–चावल को थोड़ा ठंडा कर खाने लायक बनातीं, फिर बेनिया डुला–डुलाकर बच्चन बाबू को हवा करतीं, कभी इधर–उधर उड़कर आई मक्खी भगातीं। लेकिन खिलाने का हक् मुंशी जी का था। वे थाली अपने सामने खींचते, मुझे एक बाँह से घेरकर गोद से लगाकर बिठाते। एक हाथ से दाल–भात मिलाकर उसमें थोड़ी–सी कैथे की चटनी मिलाते और कौर बनाते कहते–

''राम–राम बोलो, मुइयाँ खोलो!''

मैं मुँह खोलता, वे कौर मुँह में डालते. खिले हुए भात का एकाध दाना अगर नीचे गिर जाता तो दिलासा देते–''कोई बात नहीं. यह दाना तो गौरेया का था। वह ले जाएगी और जब तुम स्कूल जाओगे तो जितने दाने ले जाएगी, उतनी विद्या सरस्वती माई से माँगकर लाएगी और चुपके से तुम्हारे बस्ते में रख जाएगी।''

बिरजा रीझकर कहतीं– ''मेरे बच्चन भइया को बहुत विद्या मिलेगी। ऐ मुंशी जी, तुम्हारी तरह मुहर्रिर नहीं बनेंगे बच्चन भइया, मुंसिफ बनेंगे, काला चांगा पहिनकर वकील बनेंगे, मजिस्टर बनेंगे, जज साहब बनेंगे। तब तक चाची बुढ़िया हो जाएगी। बच्चन भइया कोट–पेंट पहनकर टाई लगाकर ऊँची कुर्सी पर बैठेंगे, अर्दली से पूछेंगे–'यह बुढ़िया कौन है? इसकी अर्ज़ी सबसे पहले लगाओ।'' मैं सोच रहा हूँ, यह क्या जुल्म आपने किया है, अंकुर जी! ये यादें क्यों कुरेदकर उभार दी हैं। मैं सोफे पर निढाल बैठा हूँ। आँखें नम हैं।

सुरिंदर सिंह कहते हैं, ''डॉक्टर साहब पर आज बहुत स्ट्रेन पड़ गया है।'' पद्मा इसरार करती है, ''भइया, आप एयरकंडीशन चलाकर लेट जाइए।'' पुष्पा जी कहती हैं, ''ए.सी. इन्हें माफिक नहीं पड़ता। जाओ थोड़ा टहल आओ, पान–वान खा आओ। मन बदल जाएगा।'' वह समझ गई हैं कि कहानी का मंचन मुझे कहीं गहरे हिला गया है। ऐसे में बाहर बेमतलब टहलना ही मुझे राहत देता है।

लेकिन उस शाम वह भी नहीं हो सका। बस चुपचाप पड़ा, कभी उदास, कभी खुश, कभी कथा–मंचन को याद करके चमत्कृत। अंकुर जी ने सचमुच चमत्कार किया था। किसी कहानी की नाट्य–प्रस्तुति ऐसी हो सकती है, यह मैं सोच ही नहीं सकता था। कच्चे खपरैलवाले घर का आभास देता हुआ सादा–सा सैट, बाँस की खाट पर अधलेटे मुंशी जी, पल्ले से सर ढाँपे, आँचल सहेजकर लपेटे बिरजा। दृश्य आता, घटना में ऐक्शन, संवाद और फिर उसके बाद अभिनय करता हुआ पात्र सहसा बैठ जाता है या खड़ा हो जाता है और आगे की कहानी बड़े दिलकश ढंग से सुनाने लगता है। फिर दूसरा दृश्य आता और वह कहानी कहना बंद कर अपना अभिनय करने लगता। रंगमंच और किस्सागो को इतनी बारीकी से गूँथा है अंकुर जी ने कि मैं चकित हूँ। और ये युवा छात्र अभिनेता, अभिनय करते हैं तो इनकी मुद्रा, इनकी आवाज़, इनका लहजा कुछ और है और जब वही अभिनेता अभिनय करते–करते कथा कहने लगता है तो उसकी आवाज़, उसका लहजा, उसकी मुद्रा कथाकार की हो जाती है। बिल्कुल एक अलग व्यक्तित्व !

कथाकार का यहाँ मतलब मैं नहीं। साधारणीकरण का यह अजब जादू है कि अपनी ही कहानी का मंचन देखते–देखते मैं 'मैं' नहीं रह जाता! मैं सभी दर्शकों–श्रोताओं के बीच वैसा ही एक सामान्य दर्शक श्रोता हूँ। जाने किसकी जीवन–कथा मंच पर देख रहा हूँ, अब आगे क्या होगा की प्रतीक्षा करते हुए, जाने किसके द्वारा गढ़े हुए इन पात्रों के साथ एकात्म्य स्थापित करते हुए, इस कदर एकात्म्य कि जीवनभर मुंशी जी को नकारता हुआ, उनसे विद्रोह करता हुआ, लाला–लूली न होकर हरिराम मिश्र कहलाता हुआ, कलम–कागज़ से दूर अपनी सारंगी को छाती से चिपकाए हुए हरिया अंत में जब मुंशी जी के संज्ञाहीन शरीर को झकझोर–झकझोरकर कहता है–

''मुंशी जी चुप काहे हो, बोलते क्यों नहीं, देखो हम हैं हरिया, तुम्हार बिटवा, हमहूँ तुम्हार बिटवा हैं मुंशी जी!''
तो मेरे मन की जाने कैसी घनीभूत पीड़ा सहसा पिघल जाती है, अंदर से बेहद व्याकुल हो उठता हूँ, आँखों में अनजाने ही छलछला आते हैं आँसू। गनीमत है कि हाल में झुटपुटा अँधेरा है, किसी को दीखते नहीं वे आँसू ! क्या अजीब अनुभव था वह! सलाम करता हूँ उन युवा छात्र अभिनेता, अभिनेत्रियों को, सलाम करता हूँ उस अद्‌भुत कथा–मंचन शिल्प के प्रणेता अंकुर जी को सलाम करता हूँ अपने बज्जू भइया (राम गोपाल बजाज) की अद्‌भुत परिकल्पना और सहज संयोजन को सलाम! सलाम !...

Amazing experience of story-staging - 1996

Dharamveer Bharti

When I travel to Delhi once or twice a year, I stay with my brother-in-law Surinder Singh and sister Padma -at Todarmal Road, Bengali Market, feels more like being at home than anywhere else. one does not even realize that he is somewhere else. I just reach in two hrs. taking flight from Mumbai to Delhi. A resident of Mumbai I may have touched heights but still I am same as I was earlier, a struggler, who enjoys life, teenager from Atarsuiya, Allahabad. The vibrant flavours and aromas of my childhood still remain. This particular rpart of Allahabad, Atarsuiya, Yahiyapur, Loknaya, Chowk-completely different, from Civil Lines or Cantonment Allahabad. These areas are not posh, but lifestyle of people living here seems rich looking. Well pressed clothes, pure rose perfume, typical desi sweets, Imarti, Balusahi, Kalakand, Gulab Jamun and above all, a betel leaf of real Maghai paan with betel nuts soaked in rose water. Such kind of things are not easily available in Mumbai, but in Bengali market one can get this kind of experience of Allahabad, Fresh fruit juice, good lassi, dry ginger chutney and dahi wali chaat and typical desi sweets and above all a customized beeda of wonderful Madhai Paan. No matter how the day in Delhi is spent in intellectual dullness or pseudo-literature, the evening is immersed in the old Allahabadi essence.

But one one fine day my evening was not the same like other days. I had no interest in sweets ,paan or anything.I Just entered home and sat silently on the sofa. Something strange was going on in my mind. had mixed emotions of happiness and sadness.I felt as though something was hurting me. I was very anxious. But after witnessing Ankur ji 's masterful 'Bandh Gali Ka Aakhri Makan, staged by the National School of Drama,I found myself in an emotional whirlwind. I felt as if I was tied to a heavy stone around my neck and thrown into the river for struggle helplessly, I kept flowing in the opposite direction, and was going deeper and deeper in my childhood memories, when I would have been six-seven years old, that age, that environment, , those people - Munshi ji, Birja, Hariya. Six-seven year old Bachchan Babu (this was my name in childhood) is wandering among them, and it seems as if the heart is drowning in the sea of tear-filled memories, everything seems salty and suffocating.. I felt like sharing lot of things, but will anyone listen to it? Just in front of my two-storey pucca house, there was a kutcha, single-storey tiled house, in which Munshi ji and Birja used to live. Their real names... No, leave it, what is the point of knowing their real names, let's go with the fictional names only. Let me tell you that I did not call Munshi ji as Munshi ji. I used to call him 'Happu Chacha' as in those days , delicious food was called 'happa' and instead having food at my home, I use to like the 'happa' of his house.

My mother used to cook very delicious food like urad dal full of ghee,besan curry tastes like having fish, bathua, palak, methi rotis... all Babu's friends used to wait to have the food prepared by Amma, dishes of Western Uttar Pradesh. His son Bachchan was born in Allahabad, and was a real Allahabadi. He wanted 'happa" of Munshi ji's house. Pure ghee in hot tur dal sprinkled with chilli and rice, sometimes arva rice, sometimes basmati. Munshi ji would keep the hookah aside and call out- "Bachchan Babu, your amma is sitting with a plate, son!" And Bachchan Babu would come out from door and reach Munshi ji's verandah. Birja would keep the Peedha, set up the plate, grind the rice and serve it with a spoon, add dal, put a spoon full of raw ghee on dal, and sit with the woven hathbaniya (fan) in her hand. First, she would fan to cool dal and rice and make them edible, , sometimes she would chase away the flies flying here and there. But Munshi ji had the right to feed him. He would keep the plate in front of him , put his arm around me and make me sit on his lap. Mixing the dal and rice with one hand, adding a little chutney to it and preparing the mouthful, he used to say- “Say Ram-Ram, open your mouth!”

I would open my mouth, he would put the morsel in my mouth. If a single grain of rice had fallen, he used to console me saying - "No problem." This grain was from a sparrow. She will take it back when you go to school, she will ask Vidya Saraswati Maa to bring the same number of grains and will secretly keep it in your bag.

Birja used to say -"My Bachchan bhaiya will be highly educated. O Munshi ji, Bachchan bhaiya will not become a clerk like you, he will become a Munsif, he will wear black coat, he will become a lawyer, or he will become a magistrate, he will become a judge. By then I will be old. Bachchan bhaiya will wear coat and pants and tie and will sit on a high raisedchair and will ask the orderly 'Who is this old lady?" Her application should be considered first." I am wondering, why I am getting so emotional, Ankur ji? Why have these memories been scratched and highlighted? I am sitting on the sofa. Eyes are wet.

Surinder Singh says, "Doctor Sahib is very stressed today." Padma insists, "Brother, turn on the air conditioner and lie down." Pushpa ji says, "AC not suits him. Go for a walk, have some paan etc. I will be diverted." She understood that the staging of this story had shaken me deeply. In such a situation, taking a walk outside the house gives me relief.

But even that could not happen that evening. Just lying silently, sometimes feeling sad, sometimes happy, sometimes astounded by remembering the story-enactment. Ankur ji had truly done a miracle. I could not have imagined that a dramatic presentation of a story could be like this. A simple set giving the feeling of a house made of kachha tiles, Munshiji lying on a bamboo cot, Birja covering her head with a pallu . As the scene proceeds, there is action, dialogue and there after a character suddenly sits or stands and starts narrating the further story in a very captivating manner. Then another scene proceeds and he suddenly would stop narrating the story and start acting. Ankur ji has woven theater and stories so closely that I am amazed. And when these young actors act, their posture, their voice, their tone are something else and when these same actors start narrating story while acting, then their voice, their tone, their posture become that of a storyteller. Totally a different personality!

The narrator here does not mean me. This is the strange magic of generalization that while watching my own story being staged, I am just an ordinary audience among all the viewers and listeners. Who knows whose life story I am watching on the stage, waiting for to know will happen next, establishing an identity with these characters created by someone known, such an identity that I am not accepting Munshi ji in my entire life, rebelling against him, Hariya, not Lala-Luli but being called Hariram Mishra, away from pen and paper, with his sarangi clutched to his chest, finally shakes Munshi ji's unconscious body and says - "Munshi ji, why are you silent, why don't you speak, look, I am Hariya, your son, I am your son, Munshi ji!"

Then the intense pain in my heart suddenly melts, I feel extremely distressed from within, with tears in my eyes . It's good that there is complete darkness in the hall, no one can see those tears! What a strange experience that was! I salute those young student actors and actresses, I salute Ankur ji, the pioneer of that wonderful story-staging craft, I salute the wonderful concept and intuitive combination of my Bajju bhaiya (Ram Gopal Bajaj)! Greetings

कथासार

क्या है यह 'बन्द गली का आख़िरी मकान'?

यह भी बहुत दिलचस्प ढंग है। वर्षों तक साहित्य में कहानी, नयी कहानी, साठोत्तरी कहानी, अकहानी, आदि को लेकर बहस चलती रहे। लिखने वाला चुप रहे। वर्षों तक चुप रहे और फिर चुपके से एक कहानी लिखकर प्रकाशित करा दे, और वही उसका घोषणा– पत्र हो, गोया उसने सारे वाद–विवाद के बीच एक रचनात्मक कीर्तिमान स्थापित कर दिया हो, कि देखो यह है कहानी।'

बन्द गली का आख़िरी मकान प्रकाशित होने पर जो तमाम पत्र लेखक को मिले यह उन्हीं में से एक पत्र का अंश है। क्या है यह बन्द गली का आखिरी मकान? जो एक लम्बी चुप्पी के बाद अपने प्रकाशन के साथ ही सबके मुँह बंद करा देती है। ... कहानी! हां, कहानी ही... यह कहानी डा० धर्मवीर भारती की सभी कहानियों में सबसे अधिक लम्बी है। कहानी की इकाई की अपेक्षा वस्तुतः यह एक उपन्यासिका है, जिसका कथानक बीस कथाखण्डों में विभाजित है। प्रारम्भ प्रमुख पात्र मुंशी जी की लम्बी बीमारी के एक दिन से होता है, और धीरे–धीरे मुंशी जी के माध्यम से ही विविध पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों का नये–नये अर्थों में रहस्योद्घाटन होता है। एक तरफ मुंशी जी हैं, दूसरी तरफ पंद्रह वर्ष पहले पति का घर छोड़ कर अविवाहित मुंशी जी के आसरे में आई बिरजा है। मुंशी जी कायस्थ है, तो बिरजा ब्राह्मण। बिरजा की माँ हरदेई है जो मुंशी जी में भगवान के दर्शन करती है। बिरजा का बड़ा बेटा राघोराम साक्षात गऊ है, उसके व्यक्तित्व में पितृभक्ति भरी है। वहीं दूसरा बेटा हरिराम जनम का चोर है जो अपने आचार व्यवहार से सभी के लिए परेशानी खड़ी करता रहता है। इनके अलावा मुंशी जी से संबंधित और भी कई पात्र हैं उनके जीवन से जुड़े हुए, उनके दुःख–सुख–संवेदनाओं के भागीदार, जो अतीत संबंधी स्मृति प्रसंगों में बार–बार आते रहते हैं। परिस्थितियाँ बनती बिगड़ती रहती हैं फिर स्वयं ही अपने लिए एक निश्चित नियामक का निर्धारण कर लेती हैं। जीवन चक्र जहाँ से आरम्भ होता है वही उसका अन्त हो जाता है।

कहानी का घटना स्थल वह कच्चा मकान है जो गली के अन्त में हैं जहां आकर गली बंद हो जाती है। इस मकान के समान हो मुंशी जी की स्थिति है। कथा का अन्त आते आते मुंशी जी की नियति भी बन्द गली के आखिरी मकान की तरह हो जाती है। बन्द और सीमित !

Synopsis

For years a controversy raged in the literary circles as to what is a short story. Main player of this gener kept his cool and instead of issuing thesis or anti-thesis wrote a short story so powerful that it put a lid on the controversy.

This is the longest of Dr. Bharati's short stories - a kind of short novella. This starts with a day in the life of Munshi Ji's long illness. Through him are revealed secrets about his family and the society around him. There is Munshiji. With him is Birja, a Brahmin who left her husband 15 years ago and started living with Munshiji, a Kayastha bachelar. Birja's mother Hardeyee sees god in Munshi ji. Birja's eldest son Ragho Ram worships his step-father. Second son Hari Ram is a born thief - always ready to create problems for the family. There are many more characters in the life of Munshiji who share ups and downs of life with him.

Last house, a, fragile structure, at the end of a lane is the scene of action, Munshiji's life is like this only. Towards the end he is also like the last house in the lane - closed and limited to one spot.

दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से निर्देशन में विशेषज्ञता प्राप्त देवेन्द्र राज अंकुर देशभर में अनेक व्यावसायिक व शौकिया मण्डलियों के साथ नाटकों का निर्देशन कर चुके हैं। 'संभव' ग्रुप के संस्थापक सदस्य और 'कहानी का रंगमंच' के प्रणेता श्री अंकुर अध्यापक, कैम्प निर्देशक और नाट्य निर्देशक की हैसियत से देशभर में कार्यशालाओं में भागीदारी करते रहे हैं और देश के कई शहरों में अपनी प्रस्तुतियों का मंचन कर चुके हैं। कई नाटकों का अंग्रेजी व अन्य भाषाओं से अनुवाद तथा पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से रंगमंच विषयक लेखन। रंग आलोचना में आपकी सात से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। टैगोर फेलोशिप प्राप्त प्रो. अंकुर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक रहे हैं। रंगमंच के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए आपको संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

देवेन्द्र राज अंकुर

निर्देशक

Devendra Raj Ankur

Director

Devendra Raj Ankur, a post graduate in Hindi Literature from Delhi University and specialized in direction from National School of Drama, has directed plays with many professional and amateur troupes across the country. Founder member of 'Sambhaav' Group and pioneer of 'Kahani Ka Rangmanch', Shri Ankur has been participating in workshops across the country as a teacher, camp director and theatre director and has staged his productions in many cities of the country. Translation of many plays from English and other languages and writing on theater topics regularly in newspapers and magazines. More than seven of his books on theatre criticism were published. He received Tagore fellowship as well from Ministry of Culture. Prof. Ankur was the former director of National School of Drama. You have been honoured with the Sangeet Natak Akademi award for your special contribution in the field of theatre.

निर्देशकीय

मेरे लिए यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि जिस 'कहानी का रंगमंच' की शुरुआत रंगमंडल के साथ 1975 में निर्मल वर्मा की तीन कहानियों के साथ 'तीन एकान्त' की प्रस्तुति के साथ की थी, वह शुरुआत अपने पचासवें वर्ष में प्रवेश कर रही है पुनः रंगमंडल के साथ। इस बार हम धर्मवीर भारती की चिर परिचित कहानी 'बन्द गली का आखिरी मकान' प्रस्तुत कर रहे हैं। पहले भी हम इस कहानी को 1996 में रंगमंडल के साथ कर चुके हैं लेकिन इस बार की प्रस्तुति – प्रक्रिया बिलकुल अलग है।

शुरू में अभिनेताओं के साथ इस कहानी को बार–बार पढ़ा गया। पिछली प्रस्तुति की वीडियो फिल्म को भी देखा गया। विद्यालय के निदेशक चाहते थे कि प्रस्तुति का एक संस्करण उस पहले वाली प्रस्तुति के आसपास ही एक धरोहर के रूप में लाया जाए और दूसरा संस्करण उससे बिलकुल अलग तैयार किया जाए । इसके लिए लॉटरी द्वारा अभिनेताओं को दो मंडलियों में बाँटा गया। फिर कौन सी मंडली कौन सा संस्करण तैयार करेगी– इसका फैसला भी लॉटरी द्वारा किया गया। प्रायः दर्शकों की जिज्ञासा रहती है कि यह 'कहानी का रंगमंच' है क्या ? इसका सीधा सा उत्तर यही है कि हम कहानी की फॉर्म में कोई बदलाव नहीं करते अर्थात नाट्य रुपान्तर के माध्यम से उसका कोई नया आलेख तैयार नहीं करते। कहानी अपने मूल रूप में ही मंच पर एक रंगमंचीय अनुभव में बदल जाती है।

कहानी के मूल स्वरूप से मंच– प्रस्तुति तक की यात्रा के बारे में भी दो शब्द दृ आज आप जो मंच पर देख रहे हैं उसके पीछे अभिनेताओं द्वारा बार– बार कहानी के मंच संस्करण को रचने, नष्ट करने, पुनः नया रचने और फिर उसे नष्ट करने, पुनः नया रचने और फिर उसे नष्ट करने की प्रक्रिया शामिल है। एक निर्देशक के नाते मेरा काम उनकी रचना को देखना पुनः उन्हें किसी नयी पगडंडी की तलाश के लिए प्रेरित करना रहा है। मेरी भूमिका मुख्यतः एक उत्प्रेरक की भूमिका रही है। मुझे खुशी है कि इन मंडलियों ने मेरी अपेक्षाओं को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और अपने–अपने रास्ते से दो भिन्न प्रस्तुतियाँ मंच पर लेकर आ रहे हैं।

हमें विश्वास है कि हमारे दर्शक दोनों प्रस्तुतियाँ देखना चाहेंगे।

देवेन्द्र राज अंकुर

Director Note

It is a matter of great joy for me that the 'Kahani Ka Theatre' which I started with Rangmandal in 1975 with the presentation of 'Teen Ekant' with three stories by Nirmal Verma, is entering its fiftieth year. Again with the theatre. This time we are presenting Dharamveer Bharti's familiar story 'Band Gali Ka Aakhri Makaan'. Earlier also we had done this story with Rangamandal in 1996 but this time the presentation process is completely different.

Initially the story was read repeatedly with the actors. The video film of the previous presentation was also watched. The director of the school wanted that one version of the presentation should be brought as a legacy around the earlier presentation and the second version should be prepared completely different from it. For this, the actors were divided into two groups by lottery. Then which troupe would prepare which version – this was also decided by lottery. Often the audience is curious as to whether this is 'story theatre'? The simple answer to this is that we do not make any changes in the form of the story, that is, we do not prepare a new script through its dramatic adaptation. The story in its original form turns into a theatrical experience on stage.

A few words about the journey from the original form of the story to the stage presentation. What you see on the stage today is due to the actors repeatedly creating, destroying, re-creating the stage version of the story and then destroying it again. It involves the process of doing, re-creating and then destroying it. As a director, my job has been to look at his creation and again inspire him to search for a new path. My role has largely been that of a catalyst. I am glad that these troupes left no stone unturned in meeting my expectations and are bringing two different performances on the stage in their own way.

Devendra Raj Ankur

अमित सक्सेना बैच 2003–2006 राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र हैं। उन्होंने सरायकेला छाऊ नृत्य, माइम कलारीपयट्टुय, लोक गीत और नृत्य, कॉमेडिया डेल आर्टेय, विनीज वोल्टेज, जेन नृत्य और रचनात्मक नृत्य, थिएटर थेरेपी और रेकी और योग विद्या में प्रशिक्षण में प्राप्त किया है। वह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से संस्कृति में अकादमिक अनुसंधान के लिए जूनियर और सीनियर फैलोशिप के प्राप्तकर्ता हैं।अमित सक्सेना ने नाटकों, नृत्य नाटकों, ओपेरा, माइम शो, लाइट एंड साउंड शो और नाटकीय नाटक वाचन से लेकर 50 से अधिक मंच प्रस्तुतियों में काम किया है। उन्होंने विभिन्न प्रस्तुतियों के लिए एक अभिनेता, नर्तक और कोरियोग्राफर के रूप में काम किया है। उन्होंने श्री रामगोपाल बजाज, श्री देवेन्द्र राज अंकुर, श्रीमती कीर्ति जैन, स्व. श्रीमती त्रिपुरारी शर्मा, श्री सुरेश भारद्वाज, स्वर्गीय श्री के.एस. राजेंद्रन, श्री दिनेश खन्ना, श्री लोकेंद्र त्रिवेदी जैसे प्रसिद्ध थिएटर निर्देशकों के साथ काम किया है। निर्देशक के रूप में उनकी प्रस्तुतियों का मंचन भारत रंग महोत्सव 2023 (इंदर सभा), थिएटर ओलंपिक एनएसडी 2018 (राजुला मालुशाही), भारतेंदु नाट्य महोत्सव ,एसकेपी 2018 (राजुला मालूशाही), भरत मुनि नाट्य महोत्सव, साहित्य कला परिषद (एसकेपी) 2018, (बाज बहादुर चंद) राष्ट्रीय माइम महोत्सव कोलकाता 2017 (सिद्धार्थ), युवा नाट्य महोत्सव एसकेपी 2016 (अष्टावक्र), हिन्दी अकादमी का लोक महोत्सव 2012 (गोरिया) एवं 2017 (पहाड़नेकी कथा) और विरासत महोत्सव देहरादून 2014 (इंदर सभा) जैसे थिएटर उत्सवों में किया गया

अमित सक्सेना

सहयोगी निर्देशक

अमित ने विभिन्न थिएटर कार्यशालाएँ आयोजित की हैं और एक लघु पाठ्यक्रम – कला और संस्कृति प्रशंसा विकसित और संचालित किया है। उन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों के लिए बॉडी मूवमेंट, अभिनय और आवाज़ और भाषण पर कक्षाएं संचालित की हैं, और जी.जी.एस. इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली में पारंपरिक मीडिया विषय पढ़ाया है। अमित सक्सेना को भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेजीकरण में गहरी रुचि है।

Amit Saxena

Associate Director

Amit Saxena is an alumnus of National School of Drama, 2003-2006. He has received training in Seraikella Chhau dance, Mime; Kalaripayattu; folk songs and dances; Commedia dell' arte; Viennese Waltz; Zen Dance; and Creative dance; Theatre Therapy; and orientation lectures on Reiki and Yoga Vidya. He is a recipient of Junior and Senior Fellowships for academic research in Culture from the Ministry of Culture, Govt. of India.Amit Saxena have worked in more than 50 stage productions ranging from plays, dance dramas, operas, mime shows, light and sound shows and dramatized play readings. He has worked as an actor, dancer, and choreographer for various productions. He has worked with noted theatre directors like Shri Ramgopal Bajaj, Shri D.R. Ankur, Smt. Kirti Jain, Late. Smt. Tripurari Sharma, Shri Suresh Bharadwaj, Late Shri K.S. Rajendran, Shri Dinesh Khanna, Shri Lokendra Trivedi and many others. His productions as a director have been staged in theatre festivals like the Bharat Rang Mahotsav 2023 (Inder Sabha); Theatre Olympics NSD 2018 (Rajula Malushahi); Bhartendu Natya Mahotsav SKP 2018 (Rajula Malushahi); Bharat Muni Natya Mahotsav Sahitya Kala Parishad (SKP) 2018 (Baz Bahadur Chand); National Mime Festival Kolkata 2017 (Siddhartha); Yuva Natya Mahotsav SKP 2016 (Ashtavakra); Lok Mahotsav 2012 (Goriya) & 2017 (Pahadneki Kath) of Hindi Akademi; and Virasat Festival Dehradun 2014 (Inder Sabha) to name a few. Amit has conducted various theatre workshops and has evolved and conducted a short course - Art and Culture Appreciation. He has conducted classes on body movement, acting and voice & speech for institutions like National School of Drama, Bhartiya Vidya Bhawan, Delhi University), and have taught Traditional Media subject in G.G.S. Indraprastha University, Delhi. Amit Saxena has an avid interest in the Documentation of Intangible Cultural Heritage of India.

ABHIMANCH - 1st Experiment

Munshiji	:	Aalok Ranjan
Birja	:	Shilpa Bharti
Hardayee	:	Pooja Gupta
Hariram	:	Satyendra Mallik
Ragho Ram	:	Anant Sharma
Bhavnath	:	Shiv Prasad Gond
Chhoti Bahu	:	Madhurima Tarafder
Bitauni/Mehrunisaa	:	Shivani Bhartiya
Vakeel/Maharaj/Vaidya	:	Hiralal Roy
Ishak Miyan/Bishan Mama	:	Suman Kumar

ON STAGE

SAMMUKH - 2nd Experiment

Munshiji	:	Akhil Pratap Gautam, Mazibur Rehman
Birja	:	Potshangbam Rita Devi, Poonam Dahiya
Hardayee	:	Shazia Batool
Hariram	:	Ankur Singh
Ragho Ram	:	Vivek Kanaujiya
Bitauni/Mehrunisaa	:	Pali Phukan
Chhoti Bahu	:	Poonam Dahiya, Potshangbam Rita Devi
Bhavnath	:	Tabish Khan
Vakeel/Baba/Vaidya	:	Satish Kumar
Ishak Miyan	:	Bikram Leptcha / Sameer Jiwan Ramteke
Govind Maharaj	:	Akhil Pratap Gautam
Narrators	:	Tabish Khan, Akhil Pratap Gautam, Mazibur Rehman, Ankur Singh, Vivek Kanaujiya, Potshangbam Rita Devi, Poonam ahiya, Pali Phukan, Shazia Batool, Satish Kumar, Sameer Jiwan Ramteke

अभिमंच — प्रथम प्रयोग

मुंशीजी	:	आलोक रंजन
बिरजा	:	शिल्पा भारती
हरदेई	:	पूजा गुप्ता
हरिराम	:	सत्येन्द्र मल्लिक
राघो राम	:	अनंत शर्मा
भवनाथ	:	शिव प्रसाद गोंड
छोटी बहू	:	मधुरिमा तरफदार
बिटौनी /मेहरुनिसा	:	शिवानी भारतीय
वकील /महाराज /वैद्य	:	हीरालाल रॉय
इसाक मियां /बिशन मामा	:	सुमन कुमार

सम्मुख — द्वितीय प्रयोग

मंच पर

मुंशीजी	:	अखिल प्रताप गौतम, मज़िबुर रहमान
बिरजा	:	पोतशंगबम रीता देवी, पूनम दहिया
हरदेई	:	शाज़िया बतूल
हरिराम	:	अंकुर सिंह
राघो राम	:	विवेक कनौजिया
बिटौनी /मेहरूनिसा	:	पाली फुकन
छोटी बहू	:	पूनम दहिया, पोतशंगबम रीता देवी
भवनाथ	:	ताबिश खान
वकील/महारज/वैद्य	:	सतीश कुमार
इसाक मियां	:	बिक्रम लेप्चा / समीर जीवन रामटेके
गोविंद महाराज	:	अखिल प्रताप गौतम
कथावाचक	:	ताबिश खान, अखिल प्रताप गौतम, मज़िबुर रहमान, अंकुर सिंह, विवेक कनौजिया, पोतशंगबम रीता देवी, पूनम दहिया, पाली फुकन, शाज़िया बतूल, सतीश कुमार, समीर जीवन रामटेके

OFF STAGE

Repertory Chief	:	Rajesh Singh
Costume	:	Madhurima, Shivani, Poonam, Shazia
Costume Incharge	:	Nisha, Parwati Bisht
Assistant	:	Munna
Set	:	Pooja, Anant, Shilpa, Satyender
Set Execution	:	Vikram Kumar, Manoj, Taqmir, Rizwan
Light Design Guidance	:	Avtar Sahni
Light Design & Operation	:	Sunil, Narayan Pawar
Light Execution	:	Md. Suleman, Sunil, Shubham
Property Incharge	:	Motilal Khare
Sound Technician	:	Swarn Lata, Mukesh Kumar
Music	:	Santosh Kumar, Naveen Singh, Bikram
Special Acknowledge	:	Late. Ravi Nagar
Lyrics by	:	Late. Tripurari Sharma
Sarangi	:	Anil Mishra
Vocals	:	Anil Mishra, Rajesh Pathak
Assistant	:	Parteek, Sameer
Poster - Brochure	:	Ali Raza, Mazibur Rehman
Make up	:	Hiralal, Shivani, Satish
Photography	:	Deepak Kumar, Piyush Shrivastava
Publicity	:	Dr. E. Gajalakshmi, Dr. Prakash Jha
Exhibition	:	Rajbal, Pawan Kumar
Stage Manager	:	Mazibur Rehman, Hiralal Rloy
Admin & Accounts	:	Zubair Bedi
Admin Assistant	:	Pawan Kumar
Set Design & Creative Supv	:	Rajesh Singh
Associate Director	:	Amit Saxena
Story	**:**	**Dharamveer Bharti**
Direction	**:**	**Devendra Raj Ankur**

मंच परे

रंगमंडल प्रमुख	: राजेश सिंह
वेशभूषा	: मधुरिमा, शिवानी, पूनम, शाज़िया
वेशभूषा प्रभारी	: निशा, पार्वती बिष्ट
सहायक	: मुन्ना
मंच	: पूजा, अनन्त, शिल्पा, सत्येंदर
मंच निष्पादन	: विक्रम कुमार, मनोज, तक़मीर, रिज़वान
प्रकाश परिकल्पना मार्गदर्शन	: अवतार साहनी
प्रकाश परिकल्पना संचालन	: सुनील, नारायण पवार
प्रकाश निष्पादन	: मो. सुलेमान, सुनील, शुभम
मंच सामग्री प्रभारी	: मोतीलाल खरे
सहायक	: प्रतीक, समीर
ध्वनि प्रभारी	: स्वर्ण लता, मुकेश कुमार
संगीत	: संतोष कुमार, नवीन सिंह, बिक्रम
विशेष आभार	: स्व. रवि नागर
लिरिक्स	: स्व. त्रिपुरारी शर्मा
सारंगी	: अनिल मिश्रा
वोकल्स	: अनिल मिश्रा, राजेश पाठक
सहायक	: प्रतीक, समीर
पोस्टर – ब्रोशर	: अली रज़ा, मज़िबुर रहमान
मेकअप	: हीरालाल, शिवानी, सतीश
फोटोग्राफी	: दीपक कुमार, पीयूष श्रीवास्तव
प्रचार	: डा. ई. गजलक्ष्मी, डा. प्रकाश झा
प्रदर्शनी	: राजबल, पवन कुमार
मंच प्रबंधक	: मज़िबुर रहमान, हीरालाल रॉय
रंगमंडल प्रशासन	: जुबैर बेदी
प्रशासन सहायक	: पवन कुमार
मंच परिकल्पना व रचनात्मक मार्गदर्शन	: राजेश सिंह
सहयोगी निर्देशक	: अमित सक्सेना
कहानी	: **धर्मवीर भारती**
निर्देशन	: **देवेन्द्र राज अंकुर**

National School of Drama Repertory Company

National School of Drama Repertory was formed in 1964-65 on an experimental basis by Sh. E. Alkazi. In the beginning, it is consisted of only four actors and later expanded into a larger group of actors, musicians and technicians, mainly drawn from graduates of the National School of Drama, Delhi. In 1964, Late Shri Om Shivpuri led the Company and in 1977, Late Shri Manohar Singh became the first regular Chief of the Repertory. When Manohar Singh left the Repertory Company in 1985 for a short period, its functioning was looked after by Ms. Uttara Baokar and Ms. Surekha Sikri. Late Shri J.N. Kaushal officiated as the Chief till 1988. He was followed by Prof. Ram Gopal Bajaj from 1989 to 1994; Shri Kaushal took over the rein one more time from 1994 to 97; Shri Suresh Sharma was the regular Chief of the Repertory Company from 1999 to 2021. Presently, Shri Rajesh Singh is the Chief of the Repertory Company.

Over the years, Repertory has produced a variety of plays ranging from stylized musical to realistic and contemporary adaptation of foreign and Indian plays. In addition, several eminent directors of national and international repute from within the country and abroad have worked with the Company. The Repertory has performed over 187 plays by 97 playwrights and has worked with 95 directors. Quite a few of the actors of the company have emerged as celebrities in theatre, cinema and television in India. The Repertory tours extensively all over the Country and has made several successful, trips to Germany, Poland, UK, Nepal, Mauritius, Bangladesh and China.

In 1993, the Company organized a major Festival of Mohan Rakesh's plays to mark his 20th death anniversary. In 1991 on the occasion of the Company's Silver Jubilee, Rang Yatra an exhibition consisting its Photographs, Set-Models, Costumes, Properties and Poster etc. was also put up. August 22, 2013 was the Repertory Company's 50th foundation day and Golden Jubilee Celebrations were kick-started on this day. The second important event of Company's Golden Jubilee Celebrations was held from March 22 to 24, 2014, where all the ex-repertory company members were invited. On this occasion scenes and songs from memorable productions of the past were presented to the audience, in what turned out to be an extremely nostalgic evening for many people. On the occasion of Azadi ka Amrit Mahotsav, Repertory performed plays like 'Pehla Satyagrahi' and 'Khoob Ladi Mardaani, Subhadra Ki Zabaani' across the country, while also producing classical plays like 'Abhijnan Shakuntalam' and 'Andha Yug'.

Aknowledgements

Shri Chittranjan Tripathy
Director, NSD

Shri Pradeep K. Mohanty
Registrar, NSD

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
रंगमण्डल

इब्राहिम अल्काजी ने एक प्रयोग के मद्देनज़र वर्ष 1964–65 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमण्डल की स्थापना की। शुरू में इसमें सिर्फ़ चार अभिनेता थे। बाद में ऐसे अनेक अभिनेताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों को लेकर इस रंगमण्डल का विस्तार हुआ, जो मुख्यतः राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक थे। वर्ष 1964 में स्व. ओम शिवपुरी और बाद में 1977 में स्व. मनोहर सिंह प्रथम नियमित रंगमण्डल प्रमुख बने। वर्ष 1985 में मनोहर सिंह के जाने के बाद स्व. उत्तरा बावकर और सुरेखा सीकरी ने रंगमण्डल का कार्यभार सम्भाला। कालान्तर में स्व. जे. एन. कौशल रंगमण्डल के प्रमुख के रूप में पदासीन हुए। 1988 से 1994 तक प्रो. राम गोपाल बजाज रंगमण्डल के प्रमुख रहे। उनके बाद स्व. जे.एन. कौशल ने 1994 से 1997 तक पुनः रंगमण्डल प्रमुख का कार्यभार सम्भाला। वर्ष 1999 से 2021 तक श्री सुरेश शर्मा रंगमण्डल प्रमुख के पद पर रहे। वर्तमान में श्री राजेश सिंह रंगमण्डल प्रमुख हैं।

रंगमण्डल वर्षों से विविध प्रकार की नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन करता रहा है, जिनमें शैलीबद्ध संगीतधर्मी नाटकों के साथ–साथ यथार्थवादी समसामयिक प्रस्तुतियाँ भी शामिल हैं। इनके साथ–साथ रंगमण्डल ने विदेशी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद और नाट्य रूपान्तरण भी प्रस्तुत किए हैं। रंगमण्डल के साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रंग–निर्देशकों ने काम किया है। रंगमण्डल ने 1992–1993 में मोहन राकेश की 20वीं पुण्यतिथि पर उनके नाटकों का महत्वपूर्ण उत्सव आयोजित कर उन्हें श्रद्धाँजलि दी। रंगमण्डल की रजत जयन्ती के अवसर पर वर्ष 1991 में रंगमण्डल की प्रस्तुतियों से सम्बन्धित छायाचित्र मंच–विन्यास, वेशभूषा, मंच सामग्री पोस्टर आदि को शामिल करते हुए 'रंगयात्रा' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। रंगमण्डल ने 97 नाटककारों के लगभग 187 से भी अधिक नाटक प्रस्तुत किए हैं और अब तक लगभग 95 रंग–निर्देशकों ने रंगमण्डल के साथ कार्य किया है। रंगमण्डल से सम्बद्ध अनेक अभिनेताओं ने थिएटर, सिनेमा और टेलीविजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। रंगमण्डल ने पूरे भारतवर्ष के व्यापक दौरे किए हैं तथा देश से बाहर जर्मनी, पोलैण्ड, ब्रिटेन, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश एवं चीन में भी सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं।

दिनाँक 22 अगस्त, 2013 को रंगमण्डल ने अपनी 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा दिनाँक 22, 23 एवं 24 मार्च, 2014 को धूमधाम से रंगमण्डल ने पूर्व में कार्य कर चुके अपने सभी कलाकारों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर उन कलाकारों ने यादगार नाट्य प्रस्तुतियों के कुछ दृश्यों को व पुराने नाटकों के गीतों को प्रस्तुत किया। आज़ादी के अमृत महोत्सव के मौक़े पर रंगमण्डल ने 'पहला सत्याग्रही' व 'खूब लड़ी मर्दानी, सुभद्रा की ज़बानी' जैसे नाटकों का देश भर में प्रदर्शन किया वहीं 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'अन्धा युग' जैसे क्लासिक नाटक भी तैयार किये हैं।

आभार

श्री चित्तरंजन त्रिपाठी
निर्देशक, रा.ना.वि.

श्री प्रदीप के. मोहंती
कुलसचिव, रा.ना.वि.

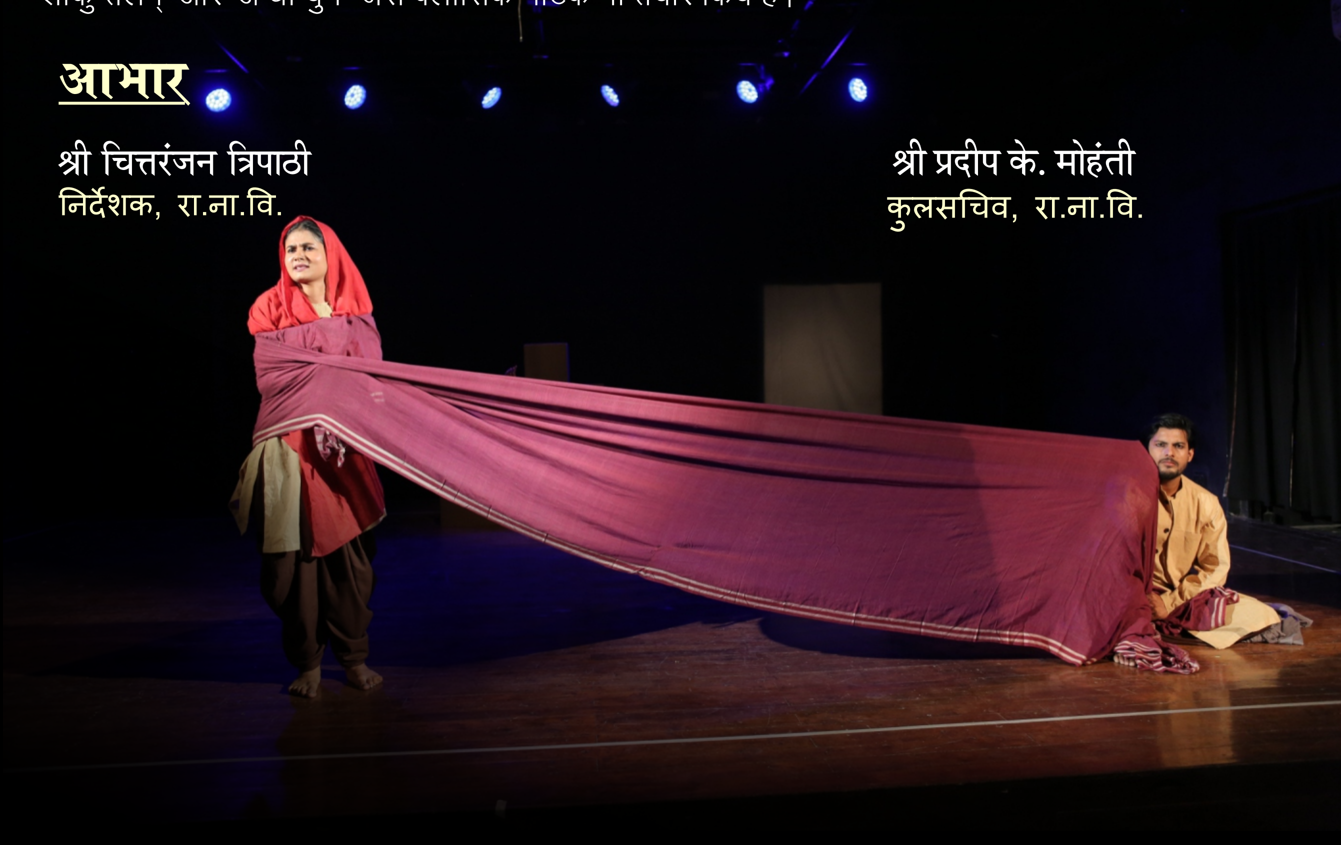

NSD REPERTORY COMPANY ARTISTS 2023-24

Shiv Prasad Gond

Pooja Gupta

Potshangbam Rita Devi

Vivek Kanaujiya

Mazibur Rehman

Bikram Lepcha

Shilpa Bharti

Madhurima Tarafder

Anant Sharma

Ankur Singh

Suman Kumar

Satyender Malik

Shazia Batool

Poonam Dahiya

Aalok Ranjan

Ramteke Sameer Jeewan

Tabish Khan

Pawar Narayan Ramesh

Parteek Badera

Hira Lal Roy

Pali Phukan

Shivani Bhartiya

Satish Kumar

Akhil Pratap Gautam

Kan nath

National School of Drama
Repertory Company

Bahawalpur House, Bhagwandas Road, New Delhi - 110001
Ph: 011- 23031105, 23031106 Web:www.nsd.gov.in
Email : nsdrepertory@yahoo.co.in

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
रंगमंडल

बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड, नई दिल्ली – 110001
दूरभाष : 011- 23031105, 23031106 वेबसाइट : www.nsd.gov.in
Email : nsdrepertory@yahoo.co.in